जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

दिसंबर 2025

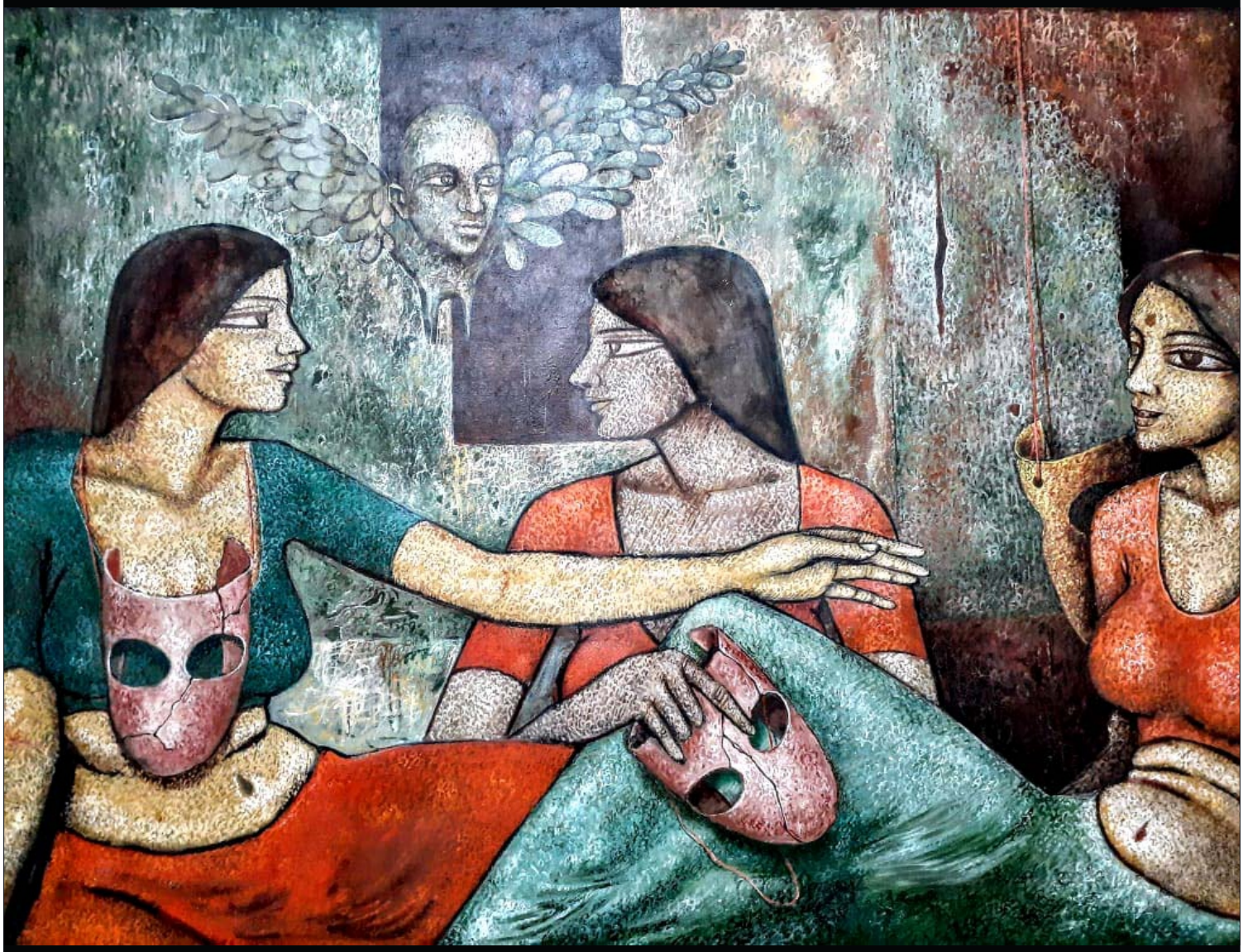

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
कार्यकारी संपादक
विवेक मिश्र
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
अजय कुमार सिन्हा

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.
प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

दिसंबर, 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-470 वर्ष : 40 अंक : 5 दिसंबर 2025

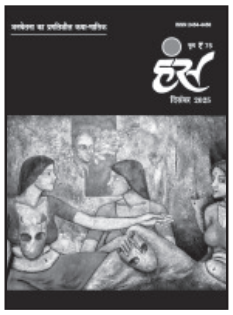

आवरण : हिमाद्रि भट्टाचार्य

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति वह भी... : संजय सहाय

अपना मोर्चा
7. पत्र

न हन्यते
10. प्रीत की दुनिया : हृषीकेश सुलभ
12. कथा के प्रीत मंजिल के नागरिक : गीताश्री

मुड़ मुड़ के देख
15. मैं हवा पानी परिंदा कुछ नहीं...: राजेश जोशी ('हंस', फरवरी 1999)

कहानियां
20. धुंध : महावीर राजी
28. रोशन मियां मानेंगे नहीं : जयनंदन
34. आह लेकिन कौन जाने... : प्रीति प्रकाश
48. फोर्स ऑफ लॉ : सत्यम श्रीवास्तव
60. एवेलीन : जेम्स जॉयस (अंग्रेजी कहानी) (अनुवाद : पीयूष ओझा)

कविताएं
58. दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात', नाज़ सिंह
59. अनामिका अनु, मुकुल शर्मा

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य
63. आधुनिक दर्शन की विकास यात्रा-7 : अशोक कुमार

आराम नगर
69. छद्म स्थापनाओं को कटघरे में खड़ा करती 'ह्यूमन्स इन द लूप' : नीरा जलक्षत्रि

लघुकथा
14. नेचुरल एक्टर : विज्ञान भूषण

ग़ज़ल
75. केशव शरण
90. धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

परख
73. परिधि से केंद्र की पड़ताल : अंकित नरवाल
76. जगदम्बा : मुक्ति की दास्तान : शशिभूषण
78. दुख और अवसाद की करुण स्वीकृति : भालचन्द्र जोशी
81. आधुनिक स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की गाथा : अभिषेक मुखर्जी
84. रिश्तों की मनोवैज्ञानिक पड़ताल : अनूप कृष्वाण

साहित्यनामा
86. अरे मन धीरज काहे न धरै : साधना अग्रवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी
91. लैंगिक समीकरण : तसलीमा नसरीन

रेतघड़ी
97

इम्प्रेशनिज़्म : एक क्रांति वह भी...

ग़ज़ा में इज़राइल का नरसंहार जारी है. लालकिले के धमाकों में 15 लोग जान गंवा चुके हैं. मानसिक संतुलन खो चुका ट्रम्प विरोधियों को सज़ा-ए-मौत से धमका रहा है. साथ ही साथ क्राइमिया, लुहांस्क और दोनेत्स्क क्षेत्रों को पुतिन के हवाले कर देने का भयंकर दबाव ज़ेलेंस्की पर बना रहा है. ज़ेलेंस्की चीं-चपड़ करते हैं तो यूक्रेन में तख्तापलट की योजना भी तैयार है. बांग्लादेश में मामला दिनोंदिन उलझता जा रहा है. बिहार में बाहुबली जीत गए हैं, बाहुबली हार गए हैं. गिने-चुने भले लोग भी. और बावजूद इसके कि समाजवाद में भरोसा रखने वाले, धर्मनिरपेक्ष आबोहवा में पले-बढ़े और लोकतांत्रिक मूल्यों के हिमायती ज़ोहरान ममदानी न्यूयॉर्क के मेयर का चुनाव जीत गए हैं, मन बहुत उदास है.

बंद कर आफ़त और क़यामत का तज़किरा
आ, कुछ तस्कीन की बातें करें...

बात अस्सी के दशक की है, जब मैंने अंग्रेज़ी उपन्यासकार और बेहतरीन कथा-लेखक जेफ़्री आर्चर का 1976 में प्रकाशित उपन्यास 'नॉट ए पेनी मोर, नॉट ए पेनी लेस' अपने अंग्रेज़ी ज्ञान की सीमाओं को लांघते हुए पढ़ा था. सट्टा बाज़ार के एक शातिर फ्रॉडिए द्वारा ठग लिए जाने पर बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध चार लोग उससे आख़िरी पाई तक वसूल लेने की योजना बनाते हैं और अंत में सफल होते हैं. बेहद रोचक इस उपन्यास को पढ़कर न केवल अमेरिकी स्वप्न के आरोह-अवरोह और सट्टा बाज़ार के बारे में ख़ासी जानकारी प्राप्त होती है, बल्कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से लेकर चित्रकला की दुनिया तक आपका ज्ञान एक लंबी छलांग लगा लेता है. हालांकि उपन्यास को पढ़ते हुए एक ग़लत धारणा भी बनती है कि विन्सेंट वैन गॉ एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार थे, जबकि इस महान कलाकार को पोस्ट-इम्प्रेशनिस्ट खांचे में रखा जाता है. इस चूक के बावजूद कहानी पढ़ते-पढ़ते इम्प्रेशनिस्ट और पोस्ट-इम्प्रेशनिस्ट काल पर ही नहीं बल्कि पूरी की पूरी पाश्चात्य चित्रकला पर ग़ज़ब की जिज्ञासा जाग उठती है.

1862 में 'अकादेमी स्वीस' से कला में पारंगत हुए शार्ल ग्लेअर के कला विद्यालय में, जहां अनेक जाने-माने चित्रकारों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, चार नौजवानों की मुलाक़ात हुई. ये नौजवान थे क्लॉड मोने, पिएर ऑगूस्ट रेनुआर, फ़्रेडेरिक बाज़ील और कैमी पिसारो. घर से समृद्ध क्लॉड मोने एक थोक-विक्रेता के पुत्र थे, जो जहाजों में खाद्य सामग्री की आपूर्ति करते थे और वित्तीय रूप से बहुत मजबूत थे. उनके विपरीत ऑगूस्ट रेनुआर लूव्र संग्रहालय के सामने के एक स्लम में बाहर से आकर बस गए थे और चीनी मिट्टी के पात्रों पर चित्रकारी करते अभावग्रस्त जीवन गुजार रहे थे. उनकी मेधा को पहचानने वाले एक कला-पारखी की सलाह पर वे ग्लेअर के विद्यालय में शरीक हो गए, चूंकि वहां किसी तरह का शुल्क नहीं लिया जाता था. कैमी पिसारो के पिता पुर्तगाली-यहूदी मूल के थे, जबकि मां फ्रांसीसी यहूदी थीं. पिसारो भी घर से संपन्न थे. उधर मदिरा के व्यापारी परिवार से आने वाले फ़्रेडेरिक बाज़ील इन चारों में सबसे धनी थे. उन्होंने आगे चलकर पिता का कोपभाजन बने क्लॉड मोने और साथी रेनुआर की समय-समय पर बहुत मदद भी की थी.

1859 में मोने नॉर्मंडी से पेरिस आ गए थे और कला की विख्यात अकादेमी स्वीस में कुछ समय तक प्रशिक्षु रहे थे, कैमी पिसारो के संपर्क में वे वहीं पहली बार आए थे. 1861 में बीस